मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 53 अंक 7 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
जुलाई 2017 बहाई वर्ष : 174

विश्व न्याय मन्दिर

अपने समाज के जीवन में बहाई जो भी योगदान देते हैं उसका लक्ष्य है एकता को बढ़ावा देना; समुदाय–निर्माण संबंधी उनका हर प्रयास इसी उद्देश्य के लिए है। कलह से थक चुके लोगों के लिए, 'महानतम नाम' की छाया तले पनप रहे समुदाय इस बात का एक जोरदार उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि एकता से क्या प्राप्त हो सकता है।

–रिज़वान 2017

कोलकाता में कोष सम्मेलन का आयोजन

पश्चिम बंगाल में कोलकाता में 17 और 18 जून 2017 को कोष सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 25 से अधिक मित्रों ने भाग लिया। सम्मेलन का संचालन राज्य के कोषाध्यक्ष द्वारा किया गया। कोष सम्मेलन विशेष रूप से रिज़वान 2017 को स्थापित हुई 23 स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सचिवों एवं कोषाध्यक्षों के लिए आयोजित किया गया था जिसमें राज्य कोषाध्यक्ष के सहायकों को भी बुलाया गया।

सम्मेलन में समूहों में पवित्र लेखों और 29 दिसम्बर 2015 के प्रपत्र के कुछ अंशों पर भी चर्चा की गई। इससे मित्रों को लेखों को समझने में और अधिक समझ प्राप्त हुई। रूही पुस्तक–2 के कुछ अनुच्छेदों पर भी चर्चा की गई और मित्रों ने बहुत ही सक्रिय रूप से इनमें भाग लिया। राज्य के कोषाध्यक्ष द्वारा कोष पर कुछ बहुत ही सुन्दर कहानियाँ भी सुनाई गईं।

सम्मेलन में कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न थे जैसे–राष्ट्रीय कोष क्या है, बिहारशरीफ कोष, लोट्स कोष इत्यादि, परन्तु मुख्य रूप से राष्ट्रीय कोष पर चर्चा की गई। इस सम्मेलन में 13 स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सचिव/कोषाध्यक्ष आये और आने वाले तीन महीनों के लिए योजना बनाई कि कैसे पहले सभाओं के सभी सदस्यों को शिक्षित किया जाये और वे स्वेच्छा से कोष में अपना योगदान दें। फिर उसके बाद क्लस्टर स्तर की एजेंसियों और संस्थानों से जुड़े सभी संसाधनों के साथ यह कार्यक्रम किया जायेगा। आने वाली तिमाही के अंत में, ट्यूटर, शिक्षक और अनुप्रेरकों के बीच इस शिक्षा को फैलाया जायेगा और वहाँ वरिष्ठ बहाईयों को भी आमंत्रित किया जायेगा। आशा की जाती है कि इससे कोष में दान देने वालों की संख्या में पांच/छह गुणा बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि चर्चा हो रही थी कि स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की ओर से बिना रसीद कैसे और कौन कोष एकत्रित करेगा। तभी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के



कोलकाता में आयोजित कोष सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

बीच से ही कुछ लोगों को चुना गया और तुरंत ही राज्य के कोषाध्यक्ष ने 'रसीद बुक' उन लोगों को दे दी।

23 स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं में से यहाँ केवल 13 ही मौजूद थीं। आशा की जाती है कि भविष्य में आयोजित किसी अन्य कार्यक्रम में वे भी अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करेंगी। अंत में, प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कोष एकत्रित किया, जिसमें 630/– रुपये एकत्रित हुए।

इस अंक में

विश्व न्याय मंदिर

सचिवालय अनुभाग

भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा

5 जून, 2017

प्रिय बहाई मित्रगण,

विश्व न्याय मंदिर ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उन तीन संदेशों को प्राप्त किया है जो भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, उप–राष्ट्रपति एम. हामिद अंसारी और लोकसभा की अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा महाजन द्वारा भारत के बहाई समुदाय को बहाउल्लाह के जन्म की द्वि–शताब्दी के अवसर पर भेजे गये हैं और जो आपके 3 अप्रैल, 2017 के ई–मेल में संलग्न किये गये थे।

जैसाकि महामहिम राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के संदेश में कहा गया है, यह उम्मीद की जाती है कि यह समारोह भारत के लोगों को बहाउल्लाह के जीवन, मानवजाति के प्रति उनके दृष्टिकोण और व्यक्ति तथा समाज के जीवन में उनकी शिक्षाओं के कारण आने वाले आध्यात्मिक परिवर्तन के विषय में चिन्तन–मनन का अवसर प्रदान करेगा। पवित्र समाधि पर विश्व न्याय मंदिर अपनी प्रार्थनायें इस हेतु अर्पित करेगा।

प्रेमपूर्ण बहाई अभिनन्दन के साथ,

सचिवालय प्रभाग

प्रतिलिपि : अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र
एशिया में सलाहकारों का मंडल
सलाहकार, जब्बार एदलखानी, ग्लोरिया जावेद,
राजन सावंत, ओमिद सियोशानसियान और दृगपाल सिंह

गुजरात में स्थानीय सभाओं के लिए सम्मेलन

गुजरात में आहवा बहाई भवन में 4 जून 2017 को स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें गुजरात की सोलह स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लगभग साठ सदस्यों ने भाग लिया। सहायक मण्डल सदस्य श्री रतिलाल गावेत के संचालन में विश्व न्याय मन्दिर के रिज़वान 2017 के संदेश का अध्ययन किया गया। इस सत्र के माध्यम से समुदाय निर्माण और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की इसमें सहभागिता पर चर्चा करने का अवसर उनके साथ मिला। द्वि–शताब्दी समारोहों के बारे में भी चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री राजेश अहीरे द्वारा दी गई प्रस्तुति से 'बहाई प्रशासन' साझा किए उनसे पता चला कि बहुत सी सभायें अपने समुदाय में विकास कार्यक्रमों का स्वामित्व ले रही हैं। कार्यक्रम के अंतिम सत्र का संचालन श्री सैफुद्दीन अनीस ने किया। द्वि–शताब्दी समारोह की तैयार और योजना ने मित्रों को दूसरे लोगों के साथ अपनी तैयारी और योजना को साझा करने का अवसर प्रदान किया है। लोगों को युगलावतार के जीवन और उद्देश्य के बारे में बताना और उनके हृदय बहाउल्लाह के साथ जोड़ने के लिए हर संभव किये जाने वाले प्रयासों के बारे में भी चर्चा की गई। साथ ही, इस पर भी चर्चा हुई कि सभी समुदायों को इस उत्सव को मनाने के लिए सहायता दिये जाने के प्रयास किये जायेंगे। सभी स्थानीय



आहवा में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

पर चर्चा करने में मदद मिली। श्री वसंत बागुल ने स्थानीय आध्यात्मिक सभा की भूमिका और उसकी प्रकृति के विषय में प्रस्तुति दी। विश्व न्याय मन्दिर के 28 दिसम्बर 2010 के संदेश से कुछ चुने हुए अनुच्छेदों पर भी चर्चा की गई। मित्रों ने जो अपने अनुभव आध्यात्मिक सभाओं ने इन उत्सवों में लोगों को आमंत्रित करने और कार्यक्रम को पूर्णरूप से आत्मनिर्भर बनाने के बारे में भी बताया। अंत में परिषद ने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी के द्वारा किए गए प्रयासों के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

ईरान के बहाईयों की रिहाई के लिए बहाई उपासना मन्दिर पर प्रार्थनासभा

28 मई 2017 को, दिल्ली, नेपाल, पंजाब और हरियाणा के बहाईयों ने बहाई उपासना मन्दिर पर सात प्रमुख बहाई और ईरान में सभी विवेकपूर्ण कैदियों की अन्यायपूर्ण कारावास की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर उनकी रिहाई के लिए प्रार्थना की। इन नौ सालों में उन्होंने अपने परिवार के अनगिनत अवसरों को याद किया। नौ वर्षों की कैद उन्हें उनकी धार्मिक आस्था के कारण दी गई। उपस्थित सभी मित्रों ने अभियान के संदेश और लॉगो जैसे–''नॉट अनदर ईयर'' और ''रिलीज बहाई7 नाउ'' से सुसज्जित टी–शर्ट और टोपियां पहनी हुई थीं। छह सौ से अधिक बच्चे, युवा एवं वयस्क और लगभग 5000 आगंतुक स्वतंत्रता, न्याय और शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के प्रतीकात्मक कार्य के रूप में हवा में छोड़े गए हजारों गुब्बारों के साक्षी बने।



बहाई उपासना मन्दिर में आयोजित प्रार्थनासभा में भाग लेने वाले मित्र

अभियान, ''नॉट अनदर ईयर'' विषय के साथ, बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा शुरू किए गए वैश्विक अभियान के समर्थन में है।

देवलाली में चलाया गया रूही अभियान

नासिक के देवलाली में 24 मई 2017 को रूही अभियान आरम्भ किया गया, जिसमें 21 युवाओं ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। तीन दिनों के बाद रूही पुस्तक–1 पूर्ण हुई और उसके बाद 8 युवाओं के साथ रूही पुस्तक–5 और 11 मित्रों के साथ रूही पुस्तक–3 शुरू की गई।

इन दोनों पुस्तक के बाद युवाकिशोरों की एक पुस्तक संपुष्टि की सुरभि को पूरा किया और शाम को औंढेवाड़ी में एक दल के साथ गए और वहाँ पर घर–घर जाकर युवाकिशोरों और बच्चों को इकट्ठा किया और 8 युवाकिशोर दल जिसमें 74 युवाकिशोर सहभागी हैं और 10 बच्चों की कक्षायें शुरू हुई, जिसमें 114 बच्चे सहभागी हैं उसके साथ 21 प्रार्थना सभायें भी शुरू हुई।



देवलाली में चलाये गये रूही अभियान में भाग लेने वाले मित्रगण

जो 21 मित्र संस्थान प्रक्रिया से गुजरे वह बहुत ही ग्रहणशील थे। गतिविधि शुरू करने के दौरान पूरा गांव देख रहा था हममें से एक युवती जो देवलाली में रहती है उसने बच्चों के साथ–साथ माता–पिता को भी 'लव फॉर बहाउल्लाह' गीत सिखाया और पूरा गांव बहाई गीतों पर झूम रहा था।

थोड़े ही समय में उन्होंने 21 युवाओं को एकत्रित किया और उनसे जो गतिविधियाँ शुरू हुईं हैं उनकी नियमितता के बारे में चर्चा की। जैसे–प्रत्येक माह में छह बार एक भ्रमणदल नासिक से आएगा और गतिविधियों की नियमितता के लिए मदद करेगा और 21 प्रार्थना सभाओं का आयोजन हर घर में प्रतिदिन होगा, युवाकिशोरों के दल और बच्चों की कक्षा एक सप्ताह में तीन बार करने की कोशिश होगी। पांच युवाओं के ऐसे चार दलों को सभी गतिविधियों की जिम्मेदारी दी जो हमेशा सहायक मंडल सदस्य के संपर्क में रहेंगे।

आने वाली दिव्य शताब्दी को मनाने की योजना इस प्रकार है कि 400 से ज्यादा घरों में भ्रमण करने की योजना बनाई जायेगी और गांव के हर माता–पिता से लेकर बच्चों तक को समारोह के लिए निमंत्रित करेंगे और यह समारोह स्थानीय स्तर पर होगा।

21 मित्रों ने बहाउल्लाह में अपनी आस्था व्यक्त की। परमप्रिय विश्व न्याय मंदिर ने युवाओं को इस जगत में मुख्य रणनीतिज्ञ बताया है। आने वाले अक्टूबर में औंढेवाड़ी के प्रत्येक युवाकिशोर और बच्चों के घरों में नियमित चलने वाली प्रार्थना सभा शुरू करने की योजना तैयार की जायेगी।

बहाई विश्व केन्द्र में युवाओं को सेवा के अवसर उपलब्ध

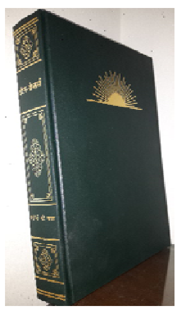
कुछ चुने हुये युवाओं के लिये बहाई विश्व केन्द्र में सेवा के अवसर उपलब्ध हैं। ये सेवायें रसोईघर में सहायक के रूप में, बाग़बानों के रूप में, सुरक्षा गार्ड और सफ़ाई–सहायकों के रूप में दी जा सकती हैं।

आवेदन करने की अंतिम तिथि	:	जुलाई 2017
सेवा की अल्पतम अवधि	:	12 महीने
सेवा आरम्भ करने का समय	:	नवम्बर/दिसम्बर 2017 अथवा जनवरी से अप्रैल 2018
योग्यता	:	अच्छे बहाई के रूप में अपनी पहचान बना चुके युवा जिनकी उम्र सेवा की अवधि आरम्भ होने के समय 18 साल या उससे अधिक हो।
कैसे आवेदन करें	:	अपना जीवनवृत्त सूचना फॉर्म पर भरकर तथा अपना फोटो संलग्न करते हुये इस वेबसाइट पर भेंजें biographical information form अथवा Offering to Serve website पर इस फॉर्म के लिये serve@bwc.org को लिखें।

कृपया ध्यान दें कि अन्य रिक्त स्थानों पर सेवा के अनेक अवसर उपलब्ध होते रहते हैं। अगर आप अतिरिक्त जानकारियां चाहते हैं तो सम्पर्क करें : serve@bwc.org

शहीदों की गाथा (डॉन–ब्रेकर्स)

बहाई धर्म के उदयकाल का 'नबील' द्वारा लिखित वर्णन



आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि हिन्दी में प्रकाशित पुस्तक **शहीदों की गाथा (द डॉन ब्रेकर्स)** जिसे हाल ही में संशोधित किया गया है, मात्र 400/– रूपये में उपलब्ध है। डाक खर्च अलग। शीघ्र ऑर्डर भेजिये।

ISBN : 978-81-7896-131-6
Size : 7” x 10”
Pages : 672

मूल्य : 400/–

बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट
एफ–3/6 ओखला, औद्योगिक क्षेत्र, फेस–1, नई दिल्ली–110020 फोन : 40523382–84
ई–मेल : bptindia@airtelmail.in
website: **www.bahaipublishingrtrust.in**

शिमला में स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के लिए क्षेत्रीय सम्मेलन

क्षेत्रीय बहाई परिषद, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू–कश्मीर द्वारा शिमला स्थित बहाई भवन में आयोजित स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के लिए दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के दौरान मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सदस्य डॉ. राम सेवक यादव ने बहाई प्रशासन और संविदा, स्थानीय आध्यात्मिक सभा के कर्त्तव्य और दायित्व, द्वि–शताब्दी समारोह आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर उपस्थित मित्रों का मार्गदर्शन किया।



शिमला में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

डॉ. राम सेवक यादव ने निम्नलिखित बिंदुओं पर स्थानीय आध्यात्मिक सभा का ध्यान आकर्षित करते हुए उनसे इन पर अमल करने के लिए प्रेरित किया :–

1. सर्वप्रथम, स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सभी सदस्यगण विश्व न्याय मंदिर से प्राप्त 28 दिसम्बर 2010 के संदेश का गहनता से अध्ययन करें और सभा से संबंधित अनुच्छेदों पर गहनता से परामर्श करें।

2. सभा को निःसंदेह आधारभूत प्रशासनिक कार्यों पर बहुत ध्यान देना होगा। उदाहरण स्वरूप, कुछ सीमा तक नियमित रूप से मिलना, 19–दिवसीय सहभोज का आयोजन करना, पावन दिवसों को मनाने के लिए योजना बनाना, एक स्थानीय कोष स्थापित करना और बहाई सिद्धांतों के अनुसार वार्षिक चुनाव कराना।

3. बहाई पवित्र लेखों के अनुसार स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्य दुनिया के संरक्षक (Guardian of the World) होते हैं। तदनुसार ही सभा के सदस्यों को अपना दायित्व निभाना चाहिए ।

4. क्षमता–निर्माण की प्रक्रिया में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को संलग्न होना चाहिए।

5. सभाएँ अपनी बैठकों में इन विषयों पर नियमित रूप से परामर्श करें–आत्माओं का प्रशिक्षण, बच्चों की शिक्षा, गरीबों के लिए राहत, विश्व भर में सभी वर्ग के कमजोर लोगों की सहायता, सभी लोगों के प्रति दयालुता, ईश्वर की सुगंध के फैलाव और उसके पावन शब्द के उन्नयन।

6. प्रशासनिक क्षमता बढ़ाने के लिए सभा के सदस्यों को एक ऐसा वातावरण तैयार करने की आवश्यकता होगी जो मित्रों को प्रोत्साहित करे कि वे प्रणालीबद्ध हों किन्तु कठोर नहीं, सृजनात्मक हों किन्तु अव्यवस्थित नहीं, निर्णायक हों किन्तु जल्दबाज नहीं, सावधान हों किन्तु नियन्त्रण करने वाले नहीं और इस बात को स्वीकार करें कि अन्त में तकनीक नहीं, बल्कि विचारों की एकता, सतत् क्रिया एवं सीखने के प्रति समर्पण ही प्रगति लायेंगे ।

7. स्थानीय सभा वित्तीय एवं अन्य संसाधनों का ठीक से आंकलन एवं उपयोग करने की क्षमता में निरंतर वृद्धि करें।

8. बहाई संस्थानों पर सेवा करते समय धर्मसंरक्षक द्वारा दी गयी चेतावनियाँ याद रखनी चाहिए "आइये हम ध्यान रखें कि प्रभुधर्म के प्रशासनिक यंत्र को पूर्ण बनाने की हमारी गम्भीर चिन्ता में, कहीं हम उस 'दिव्य' उद्देश्य को आँखों से ओझल न हो जाने दें जिसके लिए इसे बनाया गया है। बहाई

शेष पृष्ठ 4 पर

बहाई विवाह



मालेगांव की सुश्री शालिनी खांडेकर का विवाह श्री सुधीर शेलार के साथ 21 मई 2017 को स्थानीय आध्यात्मिक सभा, मालेगांव के तत्वावधान में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिजनों के अलावा अनेक बहाई मित्रगण भी उपस्थित रहे।



महाराष्ट्र के श्री विनोद सांक्रा और सुश्री तृप्ति चांभाळे का विवाह 22 मई 2017 बहाई विधिविधान के अनुसार नागपुर स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक बहाई मित्रगण भी उपस्थित रहे।



महाराष्ट्र में अकोले के धामणगांव के श्री संतोष आवारे और सुश्री दीपाली माने का विवाह 15 जून 2017 को धामणगांव में स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.

Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

जयपुर स्थानीय आध्यात्मिक सभा की श्री अशोक गहलोत से भेंट

स्थानीय आध्यात्मिक सभा, जयपुर ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से सिविल लाइन्स स्थित उनके आवास पर भेंट की। श्री अशोक गहलोत ने स्थानीय आध्यात्मिक सभा का बहुत ही गर्मजोशी और स्नेहपूर्वक स्वागत किया। ईश्वर एक है, सभी धर्म एक है, व मानवजाति एक है।

भेंट के दौरान अशोक गहलोत को बहाई साहित्य व बहाई उपासना मंदिर (कमल मंदिर) का प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों में जैनब अनंत, शाहिन



जयपुर के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ बहाई मित्रगण

श्री अशोक गहलोत ने बताया की बहाउल्लाह की द्वि–शताब्दी पर बहाई समुदाय के लिए मुख्यमंत्री कार्यालय की ओर से एक बधाई संदेश भेजा जायेगा। बहाई धर्म एक स्वतंत्र धर्म है जो मूल रूप से तीन सिद्धांतों की पालना करता है, हगीगत, नेजात हगीगत, दोनेश अनवारी, मुकेश आनन्द, बनवारी चदंवाडा, अभिनव अनन्त तथा अर्पणा अनन्त के अलावा सहायक मण्डल सदस्य राजेश मीणा व नियाज आलम अनंत और हेमराज भी उपस्थित थे।

शिमला में स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के लिए क्षेत्रीय सम्मेलन

पृष्ठ 3 का शेष

प्रशासनिक यंत्र को एक माध्यम समझा जाना चाहिए, न कि अपने आप में एक ध्येय।"

9. समाज के साथ संवाद, सामाजिक कार्यों के प्रति सजगता एवं समाज–निर्माण से संबंधित गतिविधियों से लोग यह अनुभव कर पायेंगे कि ईश्वर के अवतारों द्वारा दी गई दिव्य शिक्षाएँ कैसे उनके जीवन में प्राणदायी प्रभाव डालते हैं।

10. द्वि–शताब्दी समारोहों का आयोजन स्थानीय स्तर पर किया जाना चाहिए। अनेक रचनात्मक तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वित्तीय रूप से ये उत्सव आत्म–निर्भर होने चाहिए, इसके लिए सभाएं विशेष कोष की व्यवस्था कर सकती हैं। एक–दूसरे समुदायों से उनके द्वारा इस संबंध में किये जा रहे प्रयासों से सहायता ली जा सकती है।

एक सीख ऐसी भी : एक अनुभव

बहुत समय से एक बात मैं आप सभी के साथ बांटना चाहता था। ये एक मेरी समझ, मेरा अनुभव है, तब का है जब दिल्ली स्थित गोविंदपुरी में एक बच्चों का नैतिक वर्ग ले रहा था।

कुछ दिन पहले हर रविवार की तरह हमारा वर्ग चल रहा था। अच्छी बातें और विचारों का आदान–प्रदान हो रहा था। ज्ञातव्य है कि इन छोटे बच्चों की आकांक्षाओं के एहसास और उनकी आध्यात्मिक शिक्षा की जरूरत को समझते हुए हम उनके जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कराने में बच्चों की सहायता करते है।

बहाउल्लाह स्वयं कहते हैं कि ***"मनुष्य को अत्यन्त मूल्यवान रत्नों से परिपूर्ण एक खान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानवजाति को इसके लाभ के योग्य बना सकती है।"*** उसी मार्ग पर चलकर हम ये कदम उठाते हैं। सच में इस संसार में शिक्षा देना ही एक ऐसी बात है जिससे हम स्वर्गिक आनंद प्राप्त करते हैं। जब हम ये आनंद ले रहे थे, तो वहाँ की एक प्रतिभागी ने उनके स्कूल में सिखाया हुआ एक गीत बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया। मुझे वो सारे बोल तो याद नहीं है पर शुरुआत की पंक्तियाँ कुछ यूँ थी ***'साथी हाथ बढ़ाना, एक अगर थक जाये तो मिलकर बोझ उठाना, साथी हाथ बढ़ाना'।***

बहुत ही मधुर आवाज में प्रस्तुत किये हुए गीत से मैं अत्यधिक उत्साहित हो उठा। ये देखकर अच्छा लगा की स्कूल में भी ऐसी शिक्षाएँ दी जाती हैं। उसके गीत समाप्त करने के बाद हमने उसकी प्रशंसा की और उसका उत्साह बनाये रखा। उसके बाद मैंने उससे उस गीत का अर्थ पूछा तब उसने अपने कोमल स्वर में जवाब दिया कि, ***"हमें एक–दूसरे के साथ मिलकर चलना चाहिए और अगर कोई थकता है तो हमें उसकी मदद करनी चाहिए।"***

फिर मैंने एक सवाल किया की, "इससे क्या होगा ?"

सब एक–दूसरे की ओर देखने लगे और सोचने लगे तभी उसमें से एक ने कहा, "इससे हम साथ–साथ आगे बढ़ सकेंगे", और एक ने कहा की, "इससे मानव एकता बनी रहेगी" अब इस समय में बहुत आश्चर्य में था कि इतनी छोटी उम्र में ये बच्चे ऐसी सोच रखते है, तो बड़े बुजुर्गों में यह क्यों कम मिलती ? मैंने उन बड़ी समझ रखने वाले बच्चों के विचारों की प्रशंसा की और अपने कुछ विचार उनके साथ बाटें। फिर कुछ सामूहिक गतिविधि के बाद हंसी–खुशी हमारे वर्ग की समाप्ति हुई।

उपरोक्त सारांश बहुत छोटा होगा, परंतु इससे जो सीख मिलती है वो बहुत बड़ी और महत्वपूर्ण है। इससे हम यह समझ सकते हैं कि हमें इन बच्चों से कैसा व्यवहार रखना चाहिए और उनको किस तरह से नैतिक शिक्षा से अवगत करना चाहिए।

मैं हर समय सोचता था कि एकता कैसे स्थापित होगी? तभी एक उद्धरण ने मेरी मदद की–***"हे मनुष्य की संतानों ! क्या तुम यह नहीं जानते कि हमने तुम सबको एक ही मिट्टी से क्यों पैदा किया? इसलिए कि कोई भी प्राणी अपने को दूसरे से श्रेष्ठ न समझे।"***

जब हम एक–दूसरे को समान दृष्टि से देखेंगे और किसी को एक–दूसरे से श्रेष्ठ नहीं समझेंगे तभी ये संभव हो पायेगा। मेरे विचार से ये समानता प्राप्त करने के लिए हमें सबसे पहले न्याय की अवधारणा को जानना जरुरी होगा, उसको समझना जरुरी होगा और फिर उसको अपने जीवन में लागू करना होगा। क्योंकि जब हम किसी के साथ न्याय करते हैं तो उस व्यक्ति को हम समान सिद्ध करते हैं उसको समान दर्जा देते हैं। इसीलिए हम एक प्रार्थना में हमेशा कहते है कि, ***"हे ईश्वर मेरे मस्तिष्क को न्याय के मुकुट से और मेरे ललाट को समता के आभूषण से विभूषित कर दे"।***

–सिद्धिविनायक

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.07. 2017
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)